रात्रिक्लास 24-3-68 ओमशान्ति आत्माभिमानी हो?

बीती सो बीती देखो। आगे बढ़ते रहो। जो भी पुरुषार्थ कर के पुरा करेंगे कहेंगे ड्रामा अनुसार। तुम्हारी बुधि में है हम कितने शुध बन रहे हैं। यूं तो तुम्हारे जैसा पवित्र दुनिया में और कोई है नहीं। तुम इससमय ईश्वर के सन्तान हो। तो बहुत नशा रहता है। तुम नये विश्व के मालिक बनते हो। तुम बहुत रायल हो। तुम्हारे जितना रायल इस दुनिया में कोई है नहीं। हायेस्ट बाप के बच्चे हो ना। अभी तुम जानते हो। बाप का वर्षा लिया था फिर बाप आये हैं वर्षा देने। खुशी दिमाग में रहती है हम बाप के बच्चे हैं। यह हरदम याद रहे तो बड़ी खुशी रहे। सब से रायल बच्चे हो। एक बाप के बच्चे हो। सभी ब्रदरहुड तो कहते ही हैं। भाई2। तो बाप से वर्षा का हकदार सभी हैं। बाप के बने हो तो सदैव नशा चढ़ा हुआ रहना चाहिए बच्चे जानते हैं हम पुरुषार्थ करेंगे हो कल्याण के लिए। रिजल्ट कल्याण के ही निकलते हैं। भल बापसे प्रतिज्ञा कर फिर भी अपवित्र बनते हैं तो अपने को ही घाटा डालते हैं। तुम व्यापारीहो। बापको व्यापारी भीकहते हैं ना। सराफ भी कहते हैं। तो बच्चों को नशे में रहना चाहिए। तुम ब्राहमण कुल के हो ना। याद रहना चाहिए। यह चक्र है हो बाजोली। यात्रा पर बाजोली खेलते जाते हैं। तुम्हारी बाजोली है रूहानी। यह सभी याद रहे हमें ब्राहमण सो देवता बनते हैं। अथाह खुशी रहनी चाहिए। तुम जानते हो तुमको यहां जितनी खुशी है उतनी और कोई को नहीं। कान्ट्रास्ट ही कर ही नहीं सकते। बहुत फर्क है।

कोई भी दिल में गन्दगी न होनी चाहिए। गाया जाता है सच्चे दिल पर साहब राजी। श्रीमत पर चलते हैं तो साहब भी देख कर खुश होते हैं। ऐसे सच्चे बाप को बहुत प्यार से याद करना चाहिए। अनुभव क्या बतावें। बेहद के बाप से बेहद का वर्षा मिलता है। सच्च ही बोलते हैं। अन्दर कोई शैतानी नहीं है। ईन्द्र प्रस्त की कहानी है ना।

समझना चाहिए हम किसके सामने बैठे हैं। हर हालत में उनकी मत पर ही चलनी है। बाप को याद करो। तो कचड़ा निकल जाये। कोई कोई में तो बहुत कचड़ा होते हैं। फिर राजधानी में पद भी कम। पढ़ाई तो एक ही है। परन्तु फर्क कितना। कोई राजा कोई रंक बनते हैं। सिर्फ वह है सुख की दुनिया यह है दुःख की दुनिया। मत परन चलते हैं तो कल्प, कल्पान्तर का उंच पद गंवाये देते हैं। उंच पद पाने के लिये ही पुरुषार्थ किया जाता है। बाप ने समझाया है काम चिता पर बैठने से सांवरा बन गये हो। बाप गोरा बनाते हैं। रावण फिर काला बना देती है। शास्त्रों में तो लड़ाई आदि क्या2 बातें लिख दी हैं। शास्त्र सभी हैं भक्ति मार्ग के। उन्हों का है ब्रहम से योग। और ज्ञान भी है शास्त्रों का। शास्त्रों की अथार्टी हैं। भक्ति-मार्ग और ज्ञानमार्ग में कितना फर्क है। तुम बच्चे भी पढ़ाई में नम्बरवार हो। यह है गाड फादरली स्प्रेच्युअल युनिवर्सिटी। स्प्रीच्युअल अक्षर डालने से कवकोई भला नहीं करेंगे। स्प्रीच्युअल युनिवर्सिटी और कोई है नहीं। तुम लड़ सकते हो। कोई भी रोक न सकेंगे। इनकारपोरियल गाड-फादरलो वर्ल्ड स्प्रीच्युअल युनिवर्सिटी। स्प्रीच्युअल नालेज तो गाड के बिगर और कोई पास तो है नहीं। आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय भेकितना फर्क है। वह है तमोप्रधान। सब सतोप्रधान होते ही हैं सत्युग में। परन्तु मनुष्य अभी मानेंगे नहीं। बड़े2 शेर पीछे आवेंगे। अभी नहीं। बाप है ही गरीब निवाज़। बाप को न जानने कारण कितनी गालियां देते हैं। ग्लानी करते हैं। तुम भी शामिल थे। निन्दा करते थे। अपकार करते थे। हम फिर उपकार करते हैं। यह है निष्काम सेवा। ऐसा एक भी मनुष्य नहीं जो निष्काम सेवा कर सके। तुमको ताज व तख्त दे मैं वानप्रस्त में चला जाता हूं। यह भी निष्काम हुई ना। निष्कामसेवा करने वाला एक बाप ही है। तुम हास्पीटल में डाक्टरों, रोगीयों को भी समझा सकते हो। हमारे पास ऐसी अविनाशी बूटी है जो 21 जन्म कब बिमार नहीं पड़ेंगे। यह वसीकरण देने से बहुतों का कल्याण होसकता है। उनको ही सर्विस कहा जाता है। रोगी दुःखी होते हैं। बोलो हम ऐसा मंत्र देते हैं जो तुम जन्म-जन्मान्तर के लिए निरोगी सदा सुखी बन जावेंगे। तुम हो कल्याणकारी। आधा कल्प लिए पदमापदमपति बनते हो। अच्छा गुडनाईट।

:: ओमशान्ति ::